

बिज्जू और जादुई पंखा

टोनी, हिंदी : इंदु भूषण अरोड़ा





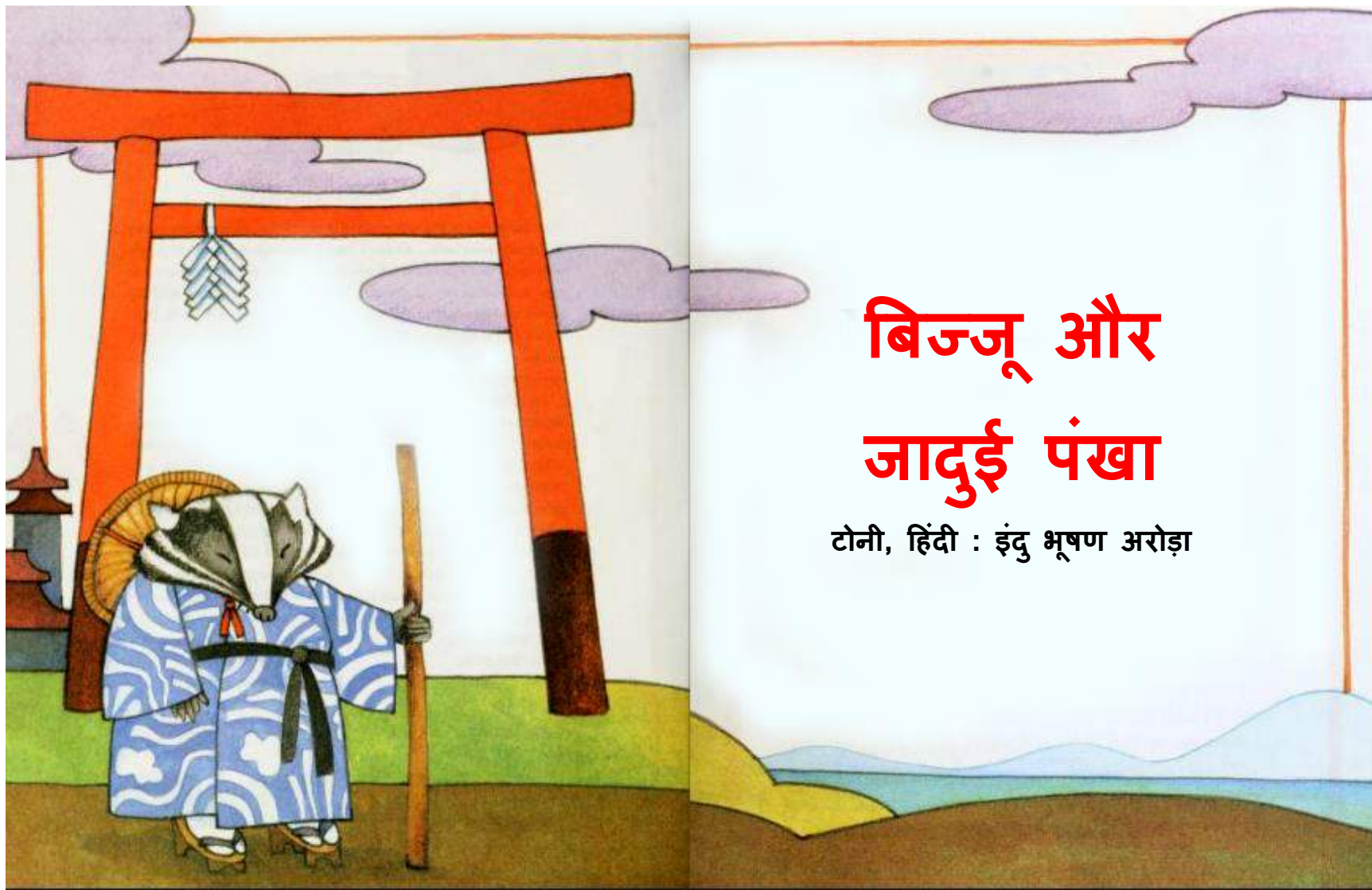
कहानी के सम्बंध में कुछ बातें

इस कहानी की लेखिका, टोनी जॉनस्टोन, को बचपन में **पिनोकियो** की प्रसिद्ध कहानी बहुत ही प्रिय थी. उस कहानी में पिनोकियो जब भी झूठ बोलता है उसकी नाक थोड़ी लंबी हो जाती है.

कोई आश्चर्य नहीं कि उन्हें जादुई पंखे की जापानी लोककथा भी बहुत अच्छी लगी. इस जादुई पंखे से हवा करने पर किसी की नाक लंबी या छोटी हो जाती है. इस जापानी लोककथा को उन्होंने एक नए ढंग से प्रस्तुत किया है.

कहानी के पात्र एक बिज्जू और तीन टेंग्यु बच्चे हैं. टेंग्यु सैंकड़ों वर्षों से जापानी लोककथाओं के पात्र रहे हैं. यह एक तरह के अनोखे अमानवीय जीव हैं जिनकी नाक लाल और बड़ी होती है, यह बहुत घमंडी भी होते हैं. आज भी जापान में गाँव में लोग इन अनोखे जीवों की कहानियाँ बड़े चाव से कहते-सुनते हैं.

टोमिए डीपौला



बिज्जू और जादुई पंखा

टोनी, हिंदी : इंदु भूषण अरोड़ा

टेंग्यु वो नटखट और अनोखे जीव हैं जो सिर्फ जापान में पाये जाते हैं. किसी टेंग्यु को देखते ही आप पहचान सकते हैं क्योंकि उनकी नाक थोड़ी लंबी होती है.

एक दिन की बात है. तीन छोटे टेंग्यु बच्चे अपने घर के अंदर एक जादुई पंखे के साथ खेल रहे थे. तीनों बहुत खुश थे. जब वह पंखे के एक तरफ से अपनी नाक पर हवा करते थे तो उनकी लंबी नाक और भी लंबी हो जाती थी. जब वह दूसरी तरफ से हवा करते थे तो नाक छोटी हो जाती थी.

एक तरफ से हवा तो नाक लंबी, दूसरी तरफ से हवा तो नाक छोटी.

लंबी...छोटी, लंबी....छोटी, लंबी.....छोटी.

इस खेल में तीनों टेंग्यु बच्चों को बहुत मज़ा आ रहा था. वह अपनी हंसी रोक नहीं पा रहे थे.

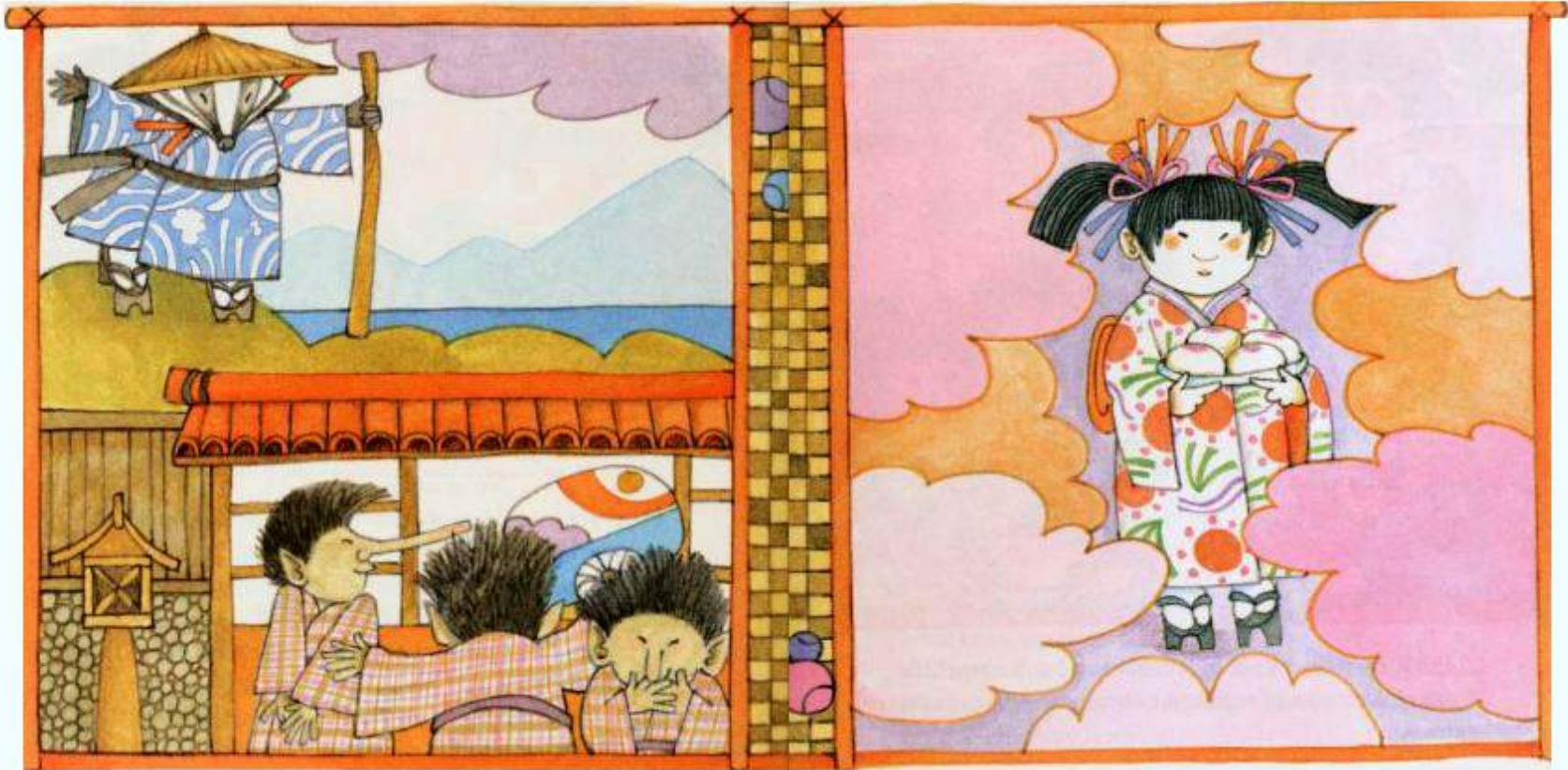
तीनों एक साथ हो...हो...हो...हो,
ही...ही...ही...ही कर रहे थे.



तभी एक बिज्जू वहां आया. उसने टेंग्यु बच्चों को जादुई पंखे के साथ खेलते देखा तो उसके मन में एक बात आई.

“हो-हो,” वह सोचने लगा, “अगर यह पंखा मेरे पास होता तो कितना अच्छा होता.” उसने बच्चों से उस पंखे को हथियाने की एक चाल सोची.

अब तुम जानते ही हो कि जापान के बिज्जू अपने को किसी भी रूप में बदल सकते हैं. उस बिज्जू ने अपने को एक छोटी लड़की में बदल लिया. हाथ में एक प्लेट पकड़े हुए, वह कूदता-फुदकता बच्चों के पास आया. प्लेट पर चार स्वादिष्ट केक रखे थे.



“सुनो छोटे टेंग्यु बच्चों,” उस लड़की ने, जो वास्तव में बिज्जू ही था, कहा, “अगर तुम मुझे अपने साथ खेलने दोगे तो मैं तुम्हें यह केक दे दूंगी।”

इन बच्चों को केक बहुत अच्छे लगते थे. वह बोले, “हाँ-हाँ, तुम हमारे साथ खेल सँकती हो. पहले हमें यह केक दे दो.”



अब केक थे चार और बच्चे थे तीन. चौथा केक किसे मिले, इस बात को लेकर बच्चों में बहस हो गयी.

चालाक बिज्जू ने तब कहा, “झगड़ा मत करो. चलो एक काम करते हैं. तुम सब अपनी आँखें बंद कर लो और सांस रोक लो. जो बच्चा सबसे अधिक समय तक अपनी सांस रोकेगा और आँखें बंद रखेगा उसे ही चौथा केक मिलेगा.”

टेंग्यु बच्चों को केक बहुत प्रिय थे. वह तुरंत बिज्जू की बात मान गए.



उन्होंने एक गहरी सांस ली, आँखें बंद कर लीं और सांस रोक ली.

धूर्त बिज्जू इसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था. उसने झट से जादुई पंखा उठाया और भाग खड़ा हुआ. बाहर आकर वह खिलखिलाकर हँसने लगा.

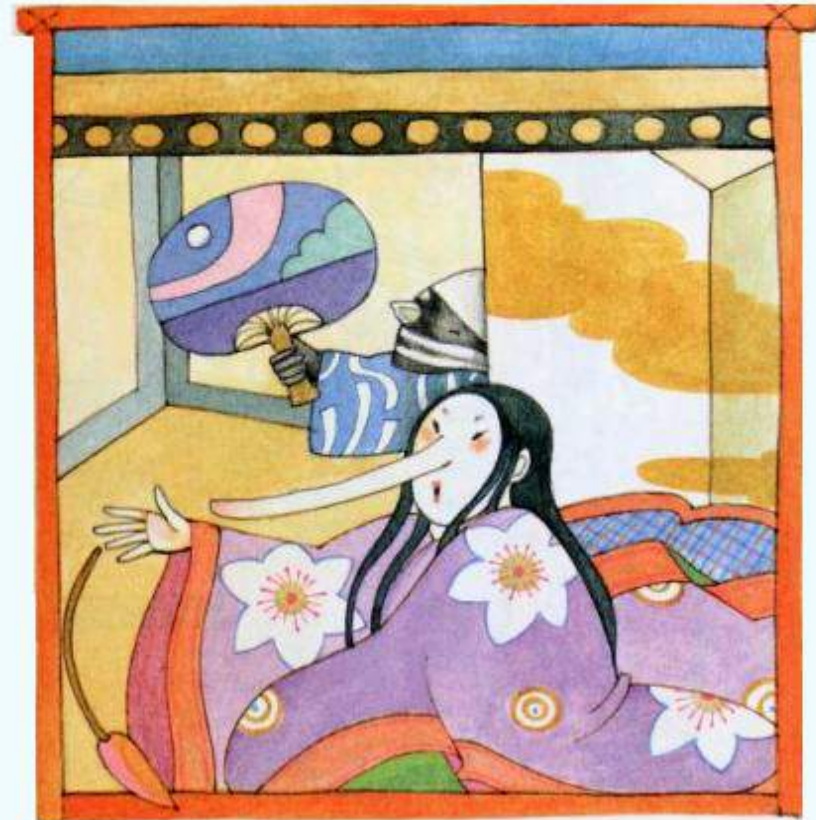


अब वह अपने असली रूप में आ गया और हँसते-हँसते शहर की ओर चल दिया. रास्ते में उसने एक आलिशान घर देखा. बिज्जू ने भीतर झाँका. अंदर एक सुंदर लड़की थी. उसने बढ़िया कपड़े पहन रखे थे. लड़की का पिता बहुत ही अमीर था.

“हो-हो,” लड़की को देख बिज्जू को शरारत सूझी. “क्यों न कुछ मस्ती की जाए?”

चुपके से, दबे पाँव चलते-चलते, वह लड़की के पीछे आ खड़ा हुआ. जादुई पंखे से वह लड़की की नाक पर हवा करने लगा. लड़की की नाक लंबी हो गयी. लंबी होती ही गयी और बहुत ही लंबी हो गयी.

लड़की घबराकर चिल्लाई.



उसके बाद बेचारी लड़की सबसे छिपकर रोने लगी और रोती ही रही, रोती ही रही..

उसके पिता ने देखा तो गुस्से से चिल्लाने लगा, धमकाने लगा. पर सब बेकार. लड़की की नाक वैसी ही रही - लंबी, बहुत लंबी.



पिता ने जापान के कई डॉक्टरों को बुलाया. इन डॉक्टरों ने कई रोग ठीक किये थे, कई बीमार मरीजों का इलाज किया था. पिता को विश्वास था कि डॉक्टर लड़की की नाक ज़रूर छोटी कर देंगे.



लड़की की नाक की जांच करके एक डॉक्टर ने कहा, "इसे ऊँटकटारा के बीज खिलाओ".

"नहीं-नहीं," दूसरे ने कहा, "इसे जलसाही खिलाओ."

"नहीं, बिल्कुल नहीं. इसे तो ढेर सारी बंदगोभी खिलाओ. यही इसका सही इलाज है." तीसरे ने कहा.

लड़की ने ऊँटकटारा के बीज खाए, पर बीजों के रोयों से उसे गुदगुदी होने लगी.

उसने जलसाही खायी, पर कांटे उसके मुँह में चुभ गए.

उसने ढेर सारी बंदगोभी भी खायी. पर उसकी नाक वैसी की वैसी ही रही - लंबी, बहुत लंबी.



उसके पिता को गुस्सा आ गया. वह चिल्लाया, “मूर्खों, अब मैं ही तुम्हारा इलाज करूँगा, इस बंदगोभी से.”

फिर उसने सारी बंदगोभियां उन डॉक्टरों पर दे मारीं. वे सब भाग खड़े हुए.



फिर पिता ने एक जादूगरनी को बुलाया. वो अपने जादू से मछली को भी सोने में बदल सकती थी. पिता ने सोचा कि जादूगरनी अवश्य ही लड़की की नाक ठीक कर देगी.

“अरे, यह तो बहुत ही सरल काम है. बस इसकी नाक पर काली मिर्च छिड़के दो, लड़की को छींकें आएंगी. छींकते-छींकते इसकी नाक छोटी हो जायेगी.” जादूगरनी ने कहा.

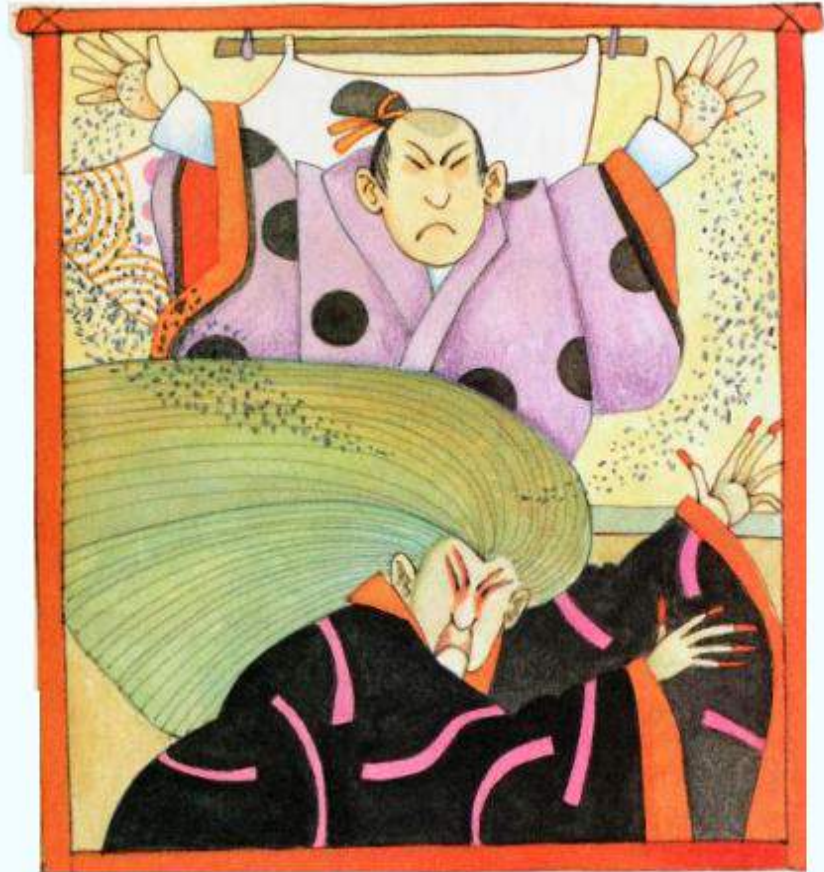


“तो देर किस बात की है,” पिता ने चिल्लाते हुए कहा. “जल्दी से काली मिर्च छिड़को .”

जादूगरनी ने ढेर सारी काली मिर्च लड़की की नाक पर छिड़क दी.

बस फिर क्या था, लड़की लगी छींकने. एक के बाद एक कई छींकें आईं. पर उसकी नाक थी वैसी की वैसी ही - लंबी, बहुत लंबी.

पिता को इतना क्रोध आया कि उसने सारी काली मिर्च जादूगरनी के ऊपर छिड़क दी. छींकते-छींकते जादूगरनी वहां से भाग खड़ी हुई.





फिर पिता ने कुछ बुद्धिमान लोगों को बुलाया. खूब सोच-विचार कर एक ने कहा, "इसकी नाक पर एक गाँठ बाँधनी होगी, तभी इसकी नाक छोटी होगी."

दूसरा बोला, "नाक पर एक फंदा कसना होगा. गाँठ बाँधने से कुछ नहीं होगा."

उनकी ऐसी बेतुकी बातें सुनकर पिता से न रहा गया. वह बोला, "तुम्हारी मूर्खता भरी बातें सुनकर मन करता है कि तुम लोगों पर ही मैं एक फंदा कस दूँ."

सब बुद्धिमान लोगों को उसने बाहर खदेड़ दिया.



निराशा से भरे पिता ने चिल्लाकर कहा, "अगर कोई इस लड़की की नाक ठीक कर दे तो मैं उसका विवाह अपनी लड़की के साथ कर दूंगा और अपनी आधी संपत्ति भी उसे दे दूंगा."

"हो-हो," बिज्जू ने पिता की बात सुनकर सोचा, "लगता है अब मेरा भाग्य जागेगा."

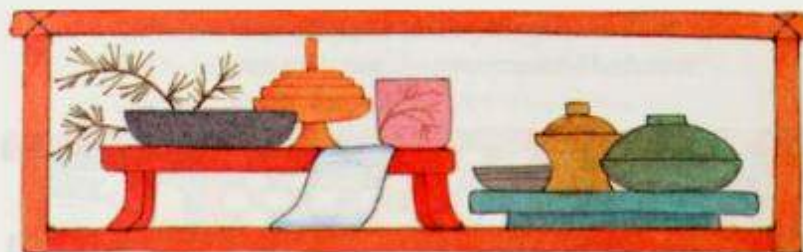
वह लड़की के पिता के पास दौड़ा आया. "मैं इसकी नाक छोटी कर सकता हूँ,"



इतना कह कर जादुई पंखे से वह लड़की की नाक पर हवा करने लगा.

पल भर में नाक पहले जैसी छोटी हो गयी, बिल्कुल वैसी ही हो गयी जैसे पहले थी.





लड़की का पिता बहुत प्रसन्न हुआ. उसने तुरंत विवाह के भोज का आयोजन किया.

एक सुंदर और अमीर लड़की को पत्नी के रूप में पाकर बिज्जू इतना खुश था कि विवाह के भोज में उसने खूब जमकर खाया. भरपेट खाने के बाद उसे नींद आने लगी.



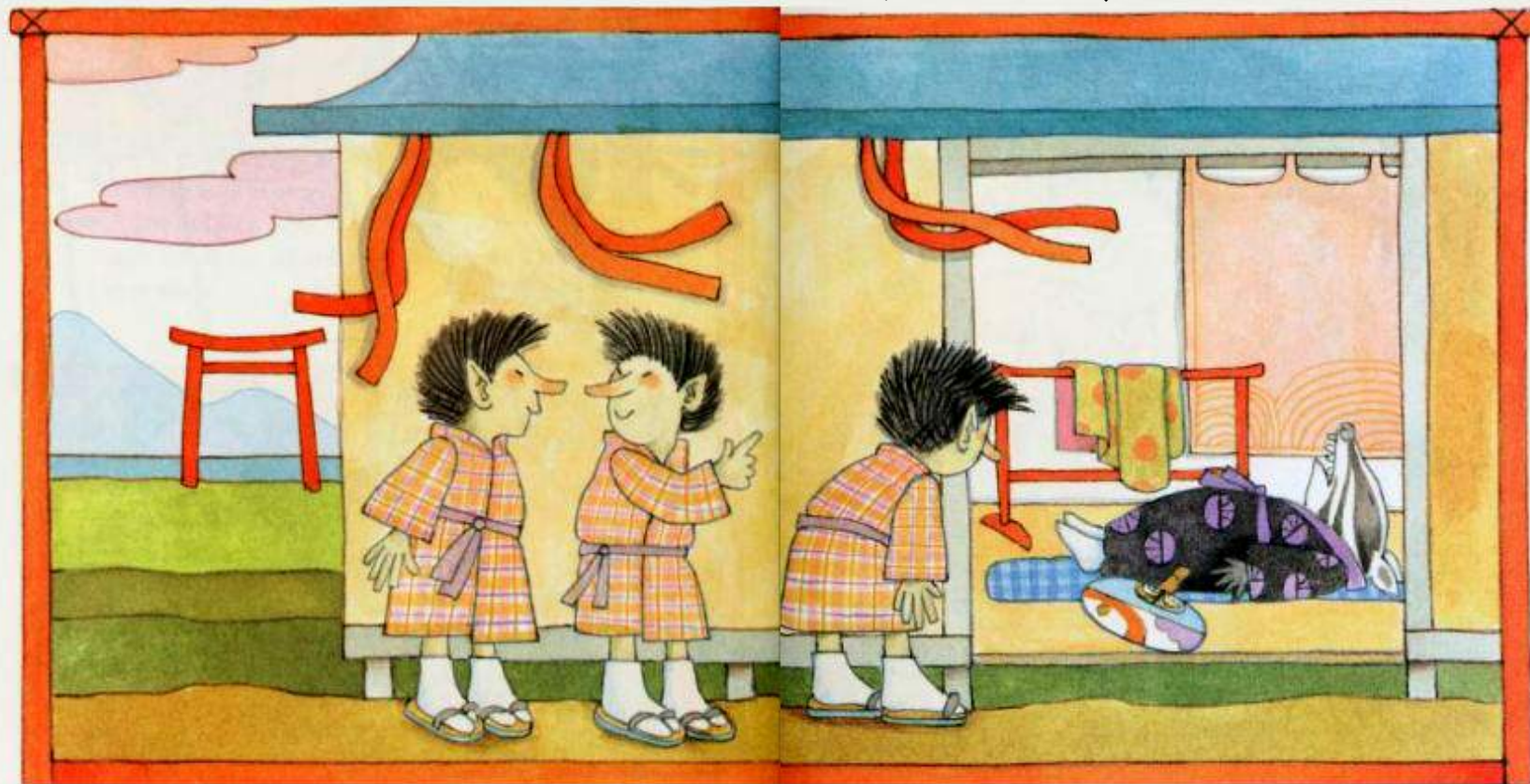
वह अपने को रोक न पाया और वहीं लेटकर खर्राटे भरने लगा, 'खर्र...खर्र...खर्र...खर्र...'



उधर तीनों टेंग्यु बच्चे धूर्त बिज्जू को ढूँढ रहे थे।
वह अपना जादुई पंखा उससे वापिस लेना चाहते थे।
उन्होंने बिज्जू को जापान के हर घर, हर मंदिर, हर
महल में ढूँढा।

सौभाग्यवश जब वह सुंदर लड़की के पिता के घर के
पास पहुंचे तब बिज्जू ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे ले रहा था
खर्र...खर्र...खर्र...खर्र...

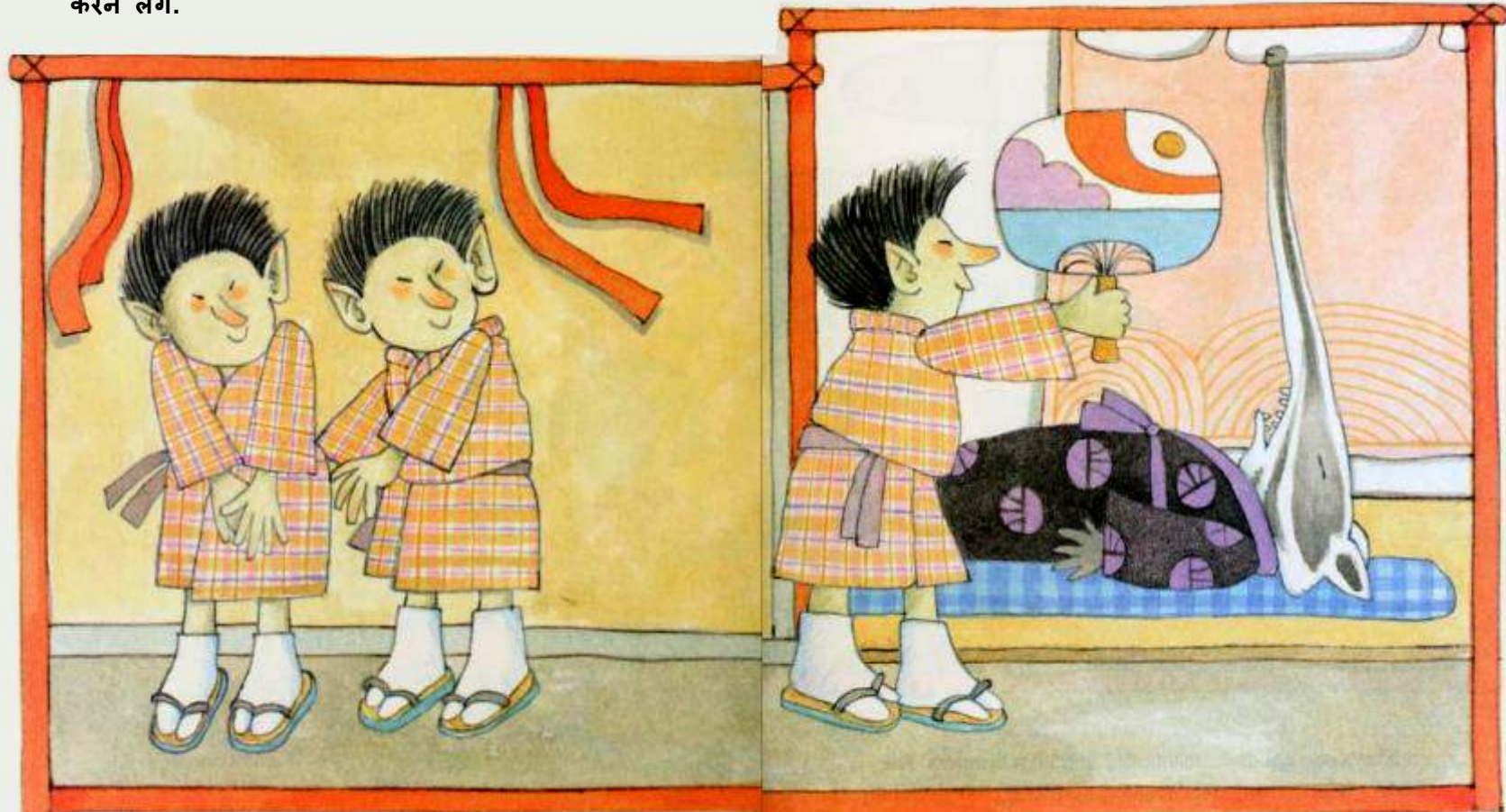
तीनों ने घर के भीतर झाँककर देखा। भीतर बिज्जू
गहरी नींद में सोया पड़ा था।

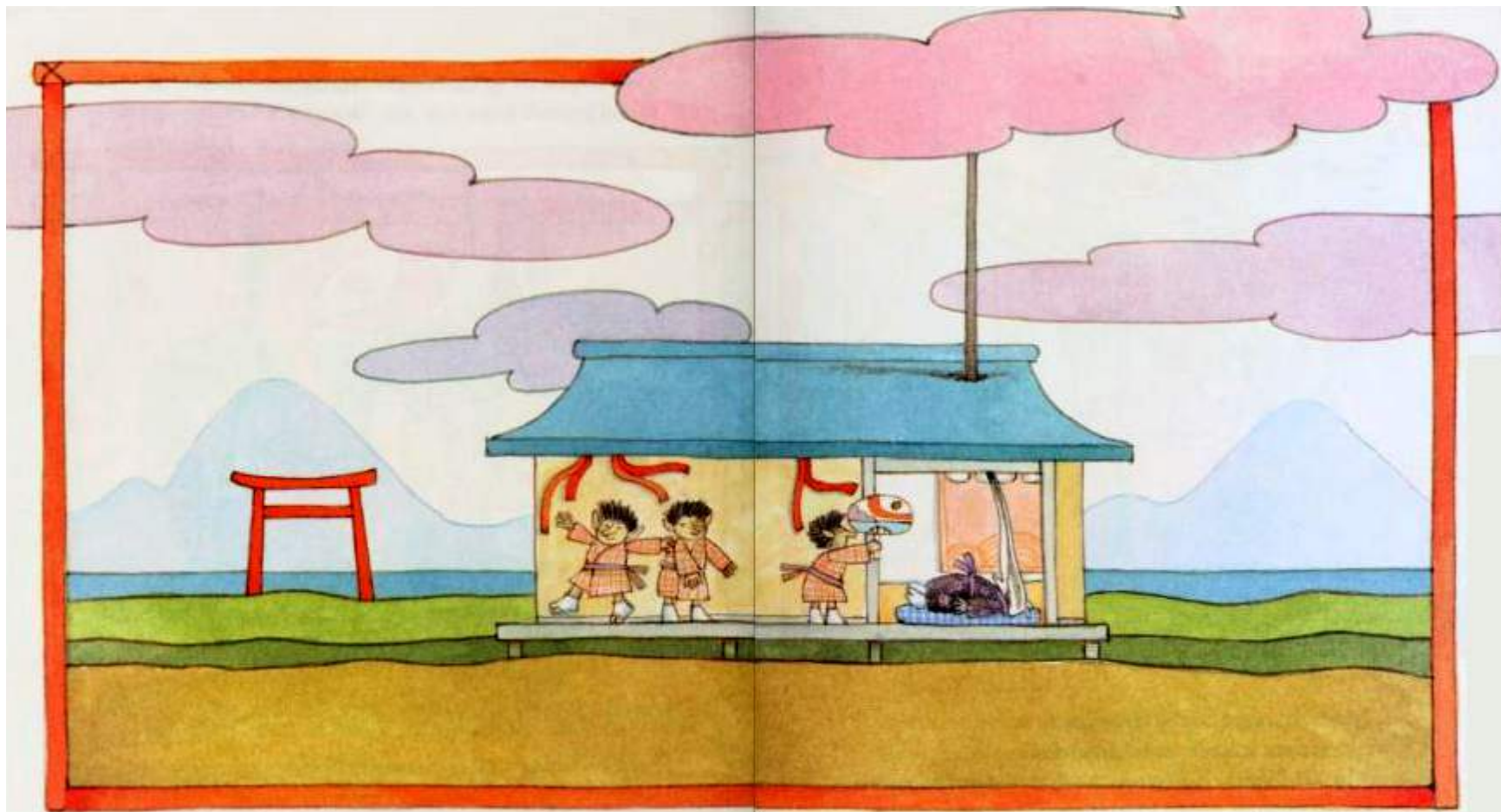


जादुई पंखा उसके निकट ही रखा था.

बिना शोर किये, दबे पाँव तीनों भीतर गये. फिर अपना जादुई पंखा उठाकर धीरे-धीरे बिज्जू की नाक पर पंखे से हवा करने लगे.

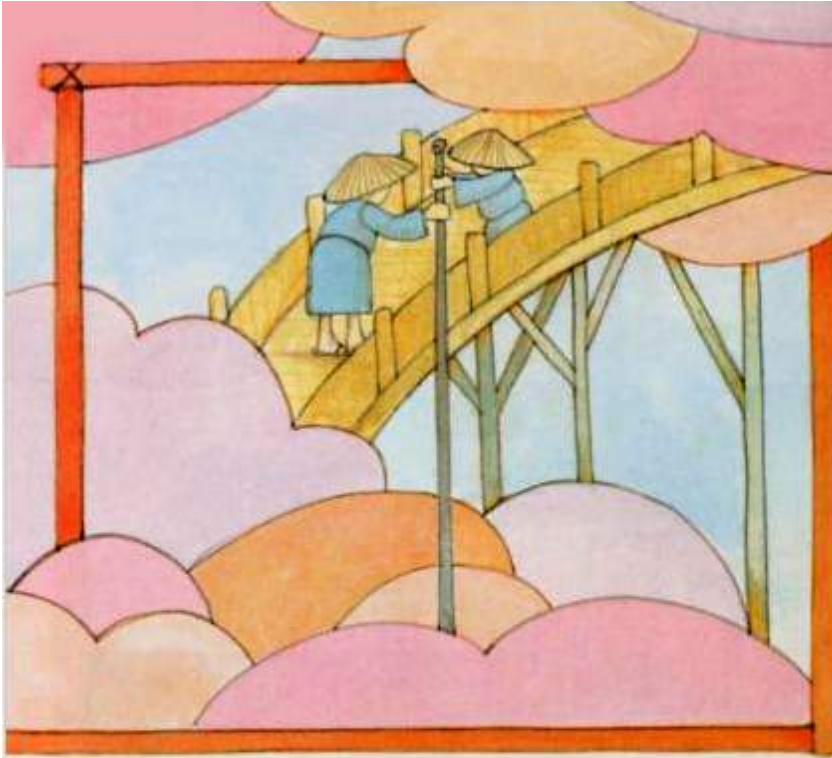
बिज्जू की नाक लंबी होने लगे.





बिज्जू खर्राटे लेता रहा. पर उसकी नाक लंबी होती गयी.

जल्दी ही बिज्जू की नाक छत के पार पहुँच गयी.
फिर बढ़ते-बढ़ते नाक बादलों तक पहुँच गयी और फिर
बादलों के पार चली गयी.



अब उसी समय बादलों के ऊपर कुछ देवदूत आकाश में एक पुल बना रहे थे. उन्हें बिज्जू की नाक दिखाई दी जो बादलों के ऊपर आ गयी थी.

“अरे देखो वह खम्बा, पुल बनाने में वो हमारे काम आ सकता है.”

“चलो इसको ऊपर खींच लें.”

देवदूत मिलकर बिज्जू की नाक को ऊपर खींचने लगे. उससे बिज्जू को तेज़ झटका लगा. उसकी नींद टूट गयी.



‘हाय मैं मरा....कोई तो मेरी सहायता करो,’ बिज्जू चिल्लाया.

वह जादुई पंखे से अपनी नाक छोटी कर सकता था. पर पंखा तो टेंग्यु बच्चों के पास था.

‘हाई हो....हाई हो, ऊपर उठाओ...ऊपर उठाओ,’ ऐसे गाते-गाते देवदूत बिज्जू की नाक को ऊपर खींचते रहे.

बिज्जू चिल्लाता रहा, “ई..ई..ई..ई..”

उस दिन के बाद से धूर्त बिज्जू कहीं दिखाई नहीं दिया, देवदूत उसे खींचकर बादलों के ऊपर आकाश में जो ले गए थे.

